तटस्थता मान-चित्र (Indifference Map)—उपरोक्त चित्र में नारंगी एवं सेव के विभिन्न संयोग को एक ही तटस्थता वक्र-रेखा द्वारा दिखलाया गया है, क्योंकि इन वस्तुओं के विभिन्न संयोगों से उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि मिलती है। किन्तु यदि नारंगी एवं सेव के

Scanned with CamScanner

ऐसे संयोग बना लिए जाएँ जिनसे उपभोक्ता को भिन्न-भिन्न संतोष प्राप्त होते हों तब ये संयोग केवल एक ही तटस्थता की वक्र-रेखा के द्वारा नहीं दिखलाये जा सकते वरन् इन्हें अलग-अलग तटस्थता की वक्र-रेखाओं के द्वारा दिखलाया जा सकता है। इस प्रकार "जब बहुत-से तटस्थता वक्रों को, जो किसी उपभोक्ता विशेष के लिए संतुष्टि के विभिन्न स्तरों (different levels of satisfaction) को बतलाते हैं, एक ही चित्र में प्रदर्शित किया जाता है तो इसे तटस्थता मान चित्र (Indifference map) कहते हैं।"

तटस्थता मान-चित्र में प्रत्येक तटस्थता की वक्र-रेखा सन्तोष के एक निश्चित स्तर को व्यक्त करती है। जैसे-जैसे ये वक्र-रेखाएँ ऊपर की ओर खिसकती जाती हैं वैसे-वैसे ये अधिक सन्तुष्टि को बतलाती हैं। दूसरे शब्दों में, तटस्थता की ऊँची वक्र-रेखाओं से नीची वक्र-रेखाओं की अपेक्षा अधिक संतोष की प्राप्ति होती है। ऐसा इसलिये होता है कि ऊँची तटस्थता की वक्र-रेखाएँ दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को दिखलाती हैं जो नीची तटस्थता की वक्र-रेखाओं के संयोग की अपेक्षा मात्रा में अधिक होते हैं।

निम्नांकित रेखा-चित्र से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। इस तटस्थता मानचित्र में, IC^1 IC^2 तथा IC^3 तटस्थता की तीन वक्र-रेखाएँ हैं। इनमें से IC^1 वक्र की अपेक्षा IC^2 वक्र-रेखा अधिक संतोष को व्यक्त करती है, क्योंकि IC_1 वक्र-रेखा के एक संयोग K से

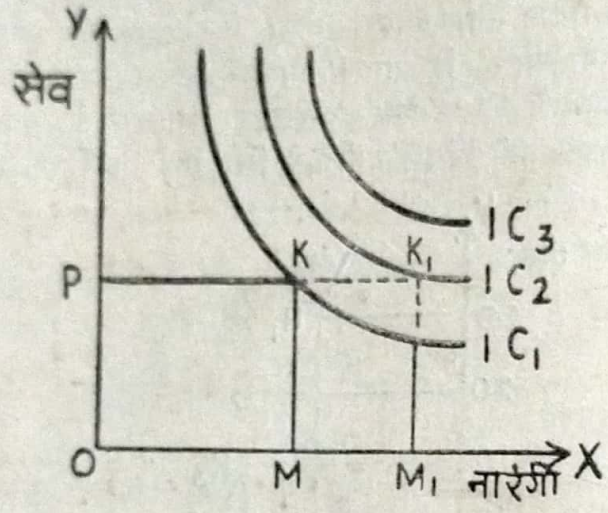

IC^2 वक्ररेखा के K_1 संयोग की अपेक्षा नारंगी की MM_1 मात्रा अधिक मिलती है जबकि सेव का मात्रा दोनो संयोगों में बराबर रहती है। इससे यह स्पष्ट है कि IC^1 वक्र-रेखा पर नारंगी एवं सेव के किसी भी संयोग को उपभोक्ता IC_1 वक्र-रेखा के किसी भी संयोग से अधिक पसन्द करेगा।

तटस्थता की वक्र-रेखाओं की प्रकृति अथवा विशेषताएँ
(Properties or Characteristics of Indifference Curves)

तटस्थता की वक्र-रेखाओं की कुछ अपनी विशेषताएँ होती हैं जिनमें निम्नांकित उल्लेखनीय हैं :

1. **सर्वप्रथम, तटस्थता की वक्र-रेखाओं की ढाल ऋणात्मक होती है** (Slope of the Indifference Curve is negative) यानी तटस्थता की वक्र-रेखाएँ नीचे दाहिने की ओर झुकी होती हैं। यानी मांग की रेखा की ही तरह तटस्थता की वक्र-रेखाएँ भी नीचे दाहिने की ओर झुकी हुई होती हैं। (All indifference curves necessarily slope downwards to the right) यह दो बातों का द्योतक है : (क) जैसे-जैसे उपभोक्ता एक उदासीनता वक्र पर बायें से दाहिने की ओर बढ़ता है, वैसे-वैसे उपभोक्ता के पास एक वस्तु की मात्रा घटती और दूसरी वस्तु की मात्रा बढ़ती जाती है और (ख) जैसे-जैसे एक वस्तु की मात्रा बढ़ती जाती है तथा दूसरी वस्तु की मात्रा घटती जाती है, वैसे-वैसे सीमांत प्रतिस्थापन की दर भी घटती जाती है।

2. **तटस्थता की वक्र-रेखाएँ मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होती हैं** (Indifference Curves are convex to the origin) : तटस्थता की वक्र-रेखाओं की दूसरी प्रकृति यह है कि ये अपने मूल-बिन्दु से उन्नतोदर (convex) होती हैं। साधारणतया इनका

Scanned with CamScanner

बायाँ भाग सापेक्षिक रूप से ढालू (relatively steep) तथा दायाँ भाग सापेक्षिक रूप से समतल (relatively horizontal) होता है। तटस्थता की वक्र-रेखाओं की यह प्रकृति भी घटती हुई सीमांत प्रतिस्थापन-दर (Diminishing Marginal Rate of Substitution) का ही परिणाम है। घटती हुई प्रतिस्थापन-दर के अनुसार उपभोक्ता के पास जैसे-जैसे किसी वस्तु x की इकाइयाँ बढ़ती जाती हैं वैसे-वैसे वह x की अतिरिक्त इकाइयों को प्राप्त करने के लिए दूसरी वस्तु y की कम मात्रा का परित्याग करता है।

3. तटस्थता की वक्र-रेखाओं का रूप गोलाकार भी हो सकता है (Indifference Curves can be of circular type well) : एक खास परिस्थिति में तटस्थता की वक्र-रेखा का रूप गोलाकार (circular) या अण्डाकार (elliptical) भी होता है। ऐसा तब होता है जब किसी वस्तु का हम लगातार उपयोग करते जाते हैं तो एक समय के बाद पूर्ण संतुष्टि का बिन्दु आ जाता है। इसके बाद भी उपभोग का क्रम जारी रखने पर ऋणात्मक सन्तुष्टि मिलने लगती है।

4 तटस्थता की वक्र-रेखाएँ एक-दूसरे को कभी भी नहीं काटती हैं (Indifference curves never intersect each other) :—तटस्थता की वक्र-रेखाओं की एक प्रकृति यह भी है कि ये कभी एक दूसरे को काटती नहीं हैं। प्रत्येक तटस्थता की वक्र-रेखा उपभोक्ता के लिए एक पृथक् संतुष्टि का स्तर व्यक्त करती है। यही कारण है कि कोई भी दो तटस्थता की वक्र-रेखाएँ एक-दूसरे को नहीं काट सकती। यदि तटस्थता की वक्र-रेखाएँ एक दूसरे को किसी बिन्दु पर काटती हैं तो इसका अर्थ यह है कि ये उस बिन्दु पर सन्तुष्टि के समान-स्तर को व्यक्त करेंगी जो बिल्कुल विचित्र एवं असम्भव-सा जान पड़ता है।

5. तटस्थता की वक्र-रेखाओं का समानान्तर होना आवश्यक नहीं है (Indifference curves need not be parallel to each other) : तटस्थता की वक्र-रेखाओं का एक-दूसरे के समानान्तर होना अनिवार्य नहीं है क्योंकि समानान्तर तटस्थता की वक्र-रेखाएँ दो वस्तुओं के बीच समान-प्रतिस्थापन की दर को बतलाती है। किन्तु ऐसा सदा नहीं होता। तटस्थता की वक्र-रेखाओं का समानान्तर होना आवश्वक नहीं है, यानी ये समानान्तर नहीं भी हो सकती हैं।

6 प्रत्येक उपभोक्ता को किसी भी वस्तु-समूह के लिए एक-से अधिक तटस्थता की वक्र-रेखाएँ होती हैं :— प्रत्येक उपभोक्ता को दो वस्तुओं के किसी भी समूह के लिए एक से अधिक तटस्थता की वक्र-रेखाएँ हो सकती हैं। इनमें से दाहिनी ओर की प्रत्येक तटस्थता की वक्र-रेखा उपभोक्ता के लिए ऊँचे संतोष को व्यक्त करती है। इनमें से अपनी आय एवं वस्तुओं के मूल्य के अनुसार उपभोक्ता किसी एक रेखा पर संतुलित होता है।

7. तटस्थता की ऊँची वक्र-रेखा नीची वक्र-रेखा की अपेक्षा अधिक संतोष प्रकट करता है :—तटस्थता की ऊँची वक्र-रेखाओं से नीची वक्र-रेखाओं की अपेक्षा अधिक संतोष की प्राप्ति होती है। ऐसा इसलिए होता है कि ऊँची तटस्थता की वक्र-रेखाएँ दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों (Combinations) को दिखलाती हैं जो नीची तटस्थता की वक्र-रेखाओं के संयोगों की अपेक्षा मात्रा में अधिक होते हैं।

Scanned with CamScanner